दो नाम
वाला
लड़का
तथा
अन्य कहानियाँ
दो नाम वाला लड़का
पी वाय बालन
चित्रांकन
सत्यानंद मोहन
खुशबू और बदबू
सारा जोसेफ
चित्रांकन
कुनाल दुग्गल
शायजा की जगह
एस संजीव
चित्रांकन
लावण्या मनी
एकलव्य

दो नाम वाला लड़का

पी वाय बालन

चित्रांकन
सत्यानंद मोहन

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

श्रृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य
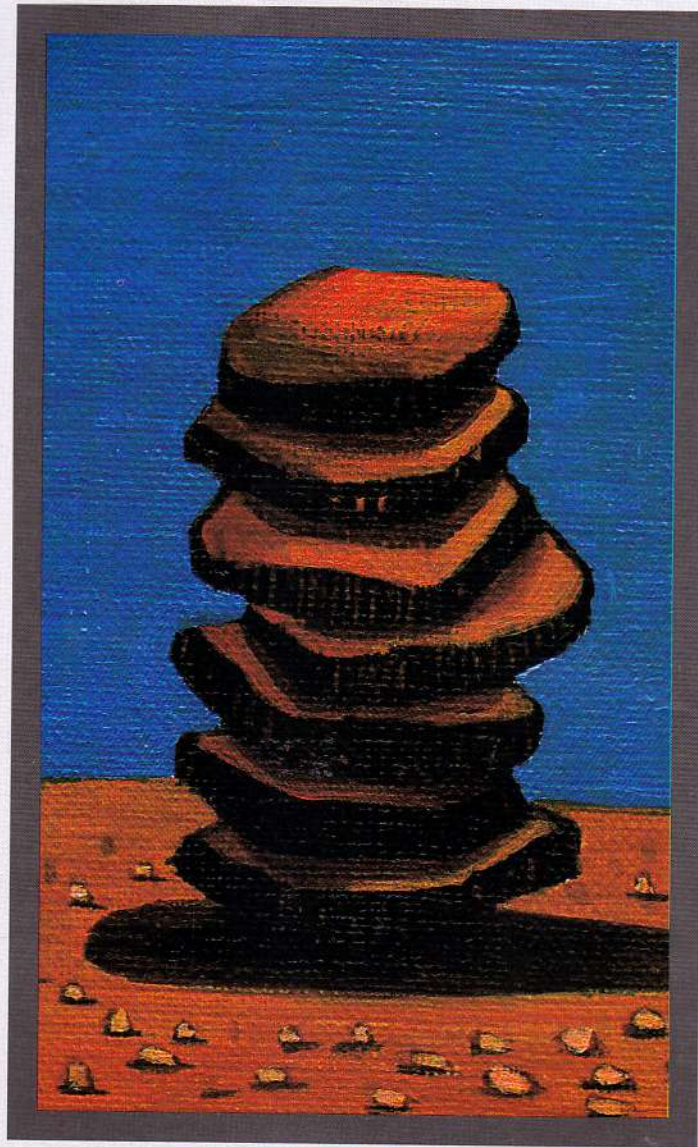
सातवीं कक्षा की परीक्षा खत्म हो चुकी थी। गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो चुकी थीं। बालचन्द्रन अपने दोस्तों के साथ मैदान में डॉजबॉल खेल रहा था। सड़क मैदान से ज़्यादा दूर नहीं थी। सड़क पर से गुज़रती भीड़ भरी बसों तथा अन्य वाहनों को मैदान से ही देखा जा सकता था।

फादर चिनप्पन बस से उतरे और मैदान के बाजू चलने लगे। मैदान में बच्चों को खेलते देख उन्होंने पूछा – "बच्चो! योहानन का घर कहाँ है जानते हो? योहानन जो हाल ही गुज़र गया था?"

बच्चों का खेल रुक गया। कुछ पल को खामोशी हो गई। एक बच्चा आगे बढ़ा और बोला – "वो देखो! वो है योहानन का घर। मैं उनका बेटा हूँ।" कहते-कहते वह खुद फादर के पास आ गया और उनके साथ-साथ चलने लगा – "चलिए।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" फादर ने पूछा।

"बालचन्द्रन!" फादर के चेहरे की तरफ देखते हुए बच्चे ने बताया।

फादर चिनप्पन एक नाटे कद के गोरे व्यक्ति थे। उनके बाल सलीके से कढ़े हुए थे और उन्होंने एक लम्बा चोगा पहना हुआ था। बालचन्द्रन समझ नहीं पा रहा था कि फादर उसके घर क्यों आए हैं?

घर पहुँचते ही बालचन्द्रन ने माँ को आवाज़ दी। माँ ने दरवाज़ा खोला और फादर का अभिवादन किया – प्रभु की जय हो!

सदा-सदा! फादर ने जवाब में कहा।

घर में प्रवेश करने पर फादर एक कुर्सी खींचकर बैठ गए। इस बीच बालचन्द्रन के भाई-बहन भी कमरे में आ गए। फादर ने उनमें से हरेक के बारे में पूछताछ की।

"तुम्हारे बापू और मैं एक ही कक्षा में पढ़ते थे। मैं तुम्हारा रिश्तेदार भी हूँ।" फादर ने कहा। हो सकता है इसी कारण फादर इस परिवार की मदद करना चाह रहे हों।

"क्या आपने कभी बालचन्द्रन को सेमिनरी (धार्मिक शिक्षणालय) में भेजने की बात सोची?" फादर ने माँ से पूछा।

"जैसी प्रभु की मर्ज़ी होगी।" माँ इतना ही कह पाई।

अभी नामों की चर्चा चल ही रही थी कि बालचन्द्रन घर से निकलकर वापस मैदान पर आ गया। खेल खत्म हो चुका था लेकिन उसके कुछ दोस्त रुके हुए थे और उसका इन्तज़ार कर रहे थे। वे जानना चाहते थे कि फादर उसके घर क्यों आए थे? बालचन्द्रन ने उन्हें बताया कि वह पादरी बनने के लिए सेमिनरी जाने वाला है।

"तू किस्मतवाला है यार! सेंट जोसेफ हाई स्कूल में पढ़ेगा।" रमेश ने कहा।

"वहाँ डॉजबॉल और कंचे खेलने देते हैं?" ज़ेवियर जूलियन ने पूछा।

"सेंट जोसेफ अपने जैसा स्कूल नहीं है। मुझे नहीं लगता तुझे वहाँ खाने में उपमा मिलेगा। और उसके साथ ताज़ा नारियल और गुड़ भी नहीं मिलेगा।" शाहुल ने हमदर्दी दिखाते हुए कहा।

बालचन्द्रन दोस्तों की बातों का कोई जवाब नहीं दे पाया, लेकिन जब उसने शहर के सेंट जोसेफ स्कूल में पढ़ने की बात सोची, नाम को लेकर उसकी चिन्ता छूमन्तर हो गई।

बिशप का मकान शहर में था। वहाँ बालचन्द्रन को गणित और अँग्रेज़ी की परीक्षा देनी पड़ी। फिर एक चिकित्सक ने उसका स्वास्थ्य परीक्षण किया। इन सब परीक्षाओं के बाद उसे सेमिनरी में प्रवेश मिला। जब उसकी गॉडमदर रॉकी कोचइया को इसकी खबर मिली, वह बहुत खुश हुई। "वह बहुत होशियार बच्चा है। मैं जानती थी वह कर लेगा। बड़े ही फख्र के साथ कहा।"

आज रविवार था। अगले दिन उसे सेमिनरी के लिए निकलना था। बालचन्द्रन मास (सामूहिक प्रार्थना) के लिए चर्च गया। वहाँ लड़कियों का कॉयर (गान समूह) चल रहा था। बालचन्द्रन ने स्तुतियों को और पादरी द्वारा दिए लेटिन प्रवचन को ध्यान से सुना। पादरी ने उसे आशीर्वाद दिया।

उस रात बालचन्द्रन सो नहीं पाया। उसके दिमाग में सफेद चोगा पहने उसकी खुद की छवि घूमती रही। सुबह तक वह करवटें बदलता रहा। सुबह उठकर एक बार फिर उसने अपनी सन्दूक को सम्हाला। नई सिली तीनों पोशाकें वहाँ सही-सलामत थीं।

भोजन के बाद वह अपनी माँ और बड़े भाई के साथ सेमिनरी के लिए निकला। जब वे तिरुअनन्तपुरम शहर पहुँचे, वे एक फोटोग्राफर के पास गए और वहाँ उन्होंने अपने परिवार का एक फोटो खिंचवाया।

शाम को कोई चारेक बजे वे सेमिनरी पहुँचे। वहाँ एक छोटी-सी रस्म के साथ उनका स्वागत किया गया। बालचन्द्रन ब्रदर फ्रीटस बन गया। माँ और भाई के लौटने का समय हो गया, ब्रदर फ्रीटस की आँखें भर गईं। माँ ने भी अपने आँसू पोंछे।

सेंट जोसेफ स्कूल में उसका पहला दिन था। पुराने स्कूल की तरह यहाँ भी हाज़िरी रजिस्टर में उसका नाम बालचन्द्रन ही लिखा हुआ था। जब उसका नाम पुकारा गया, इसी नाम से उसने हाज़िरी दी। बीच की छुट्टी में नए सहपाठियों ने उसे घेर लिया।

"ऐसा कैसा नाम है तुम्हारा?" एक ने पूछा।

"क्या तुम्हारा धर्म परिवर्तन हुआ है?" दूसरे ने सवाल किया।

उसने "हाँ" में गर्दन हिलाई। सब हँस पड़े।

बालचन्द्रन को बड़ी शर्म आई। बड़ी मुश्किल से आँसू रोके। फिर कक्षा में भी मन नहीं लगा। बालचन्द्रन – फ्रीटस – धर्म परिवर्तित, मिल्क पाउडर ईसाई – यही सब दिमाग में उथल-पुथल मचाता रहा। शाम को सेमिनरी लौटने तक भी वह इस उथल-पुथल से छुटकारा नहीं पा सका। जब गिरिजाघर का घण्टा बजा, तब जाकर उसे महसूस हुआ कि उसे कितनी देर हो गई है। जब तक ब्रदर फ्रीटस सोने से पहले प्रार्थना करने के लिए आँखें बन्द करता, दूसरे नींद में गुडुप हो चुके थे।

माता मरियम से लगातार प्रार्थना करने से थोड़ी मन की शान्ति मिली। उस रात वह शय्या क्रमांक 22 पर सो रहा था, बाहर बूँदा-बाँदी हो रही थी। सपने में उसने देखा कि वह बारिश में पूरी तरह भीग गया है और अपने दोस्तों के साथ डॉजबॉल खेल रहा है। फिर एक लहर आई और पैरों को भिगोकर लौट गई। पता नहीं कब उसे नींद आ गई।

फ्रीटस
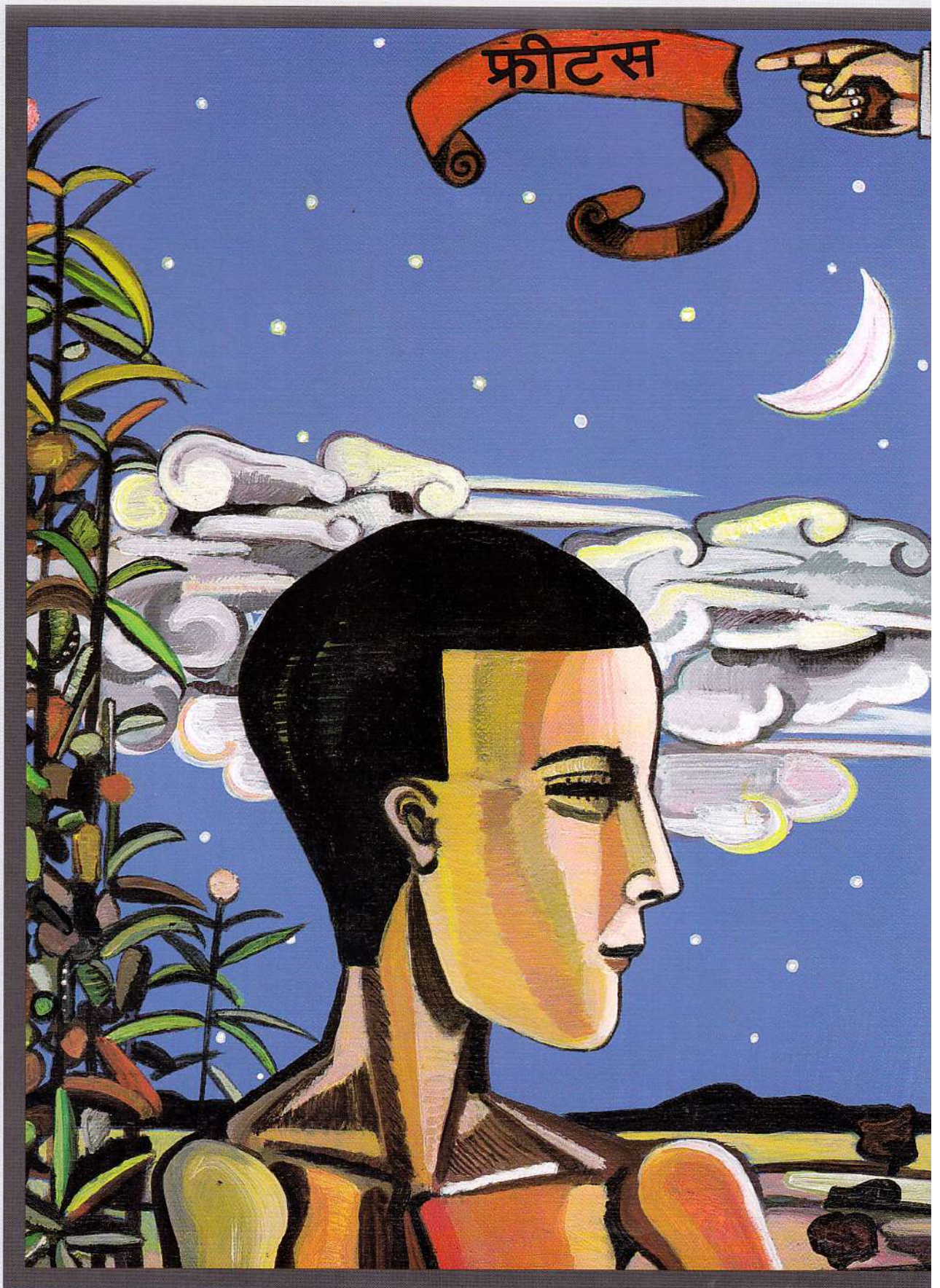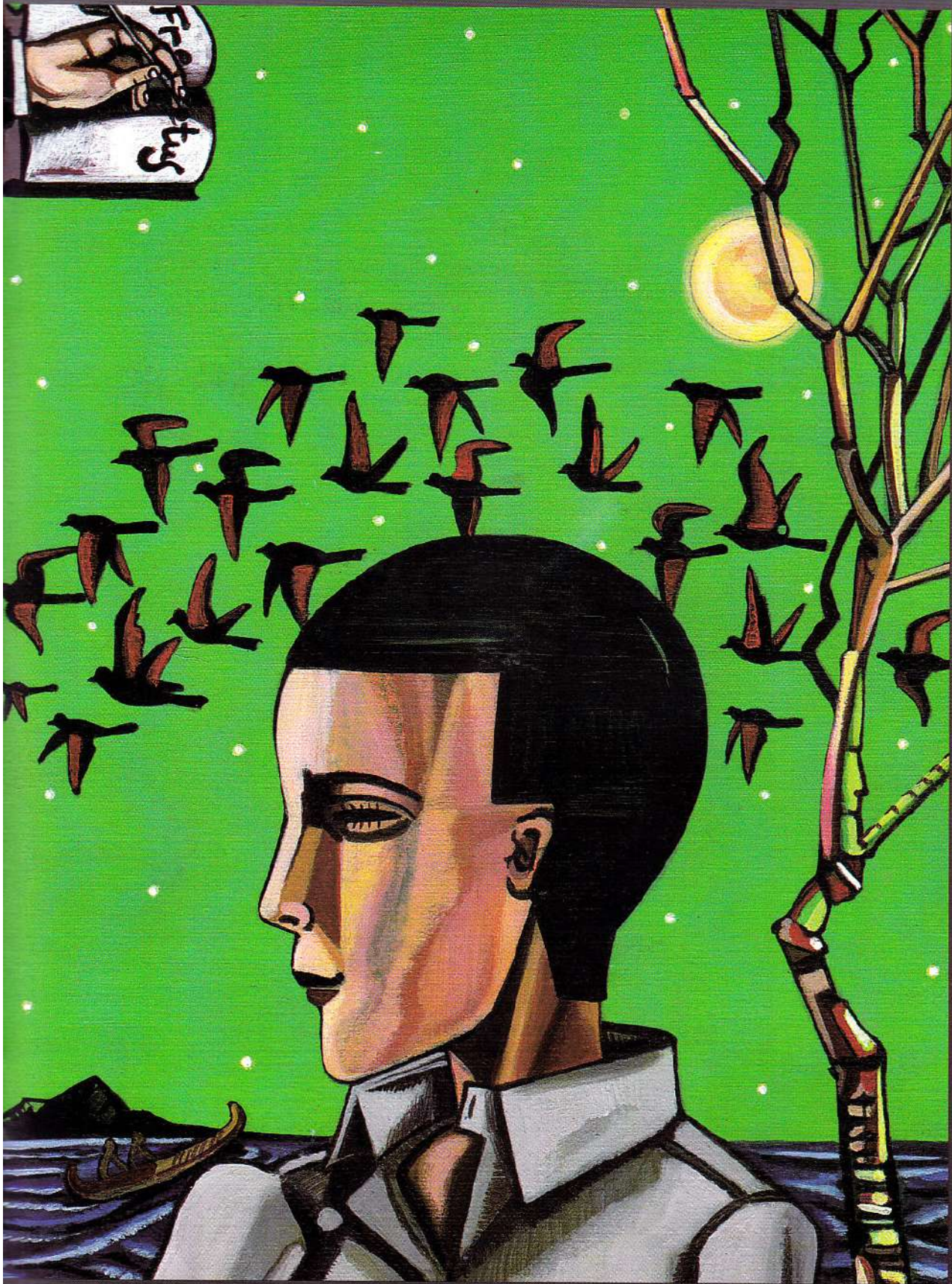
गाँव के स्कूल में बालचन्द्रन को होशियार बच्चा माना जाता था। यहाँ शहर में वह कितनी भी कोशिश कर ले, वह वैसा नहीं हो सकता था। फिर भी आठवीं की परीक्षा में वह किसी तरह पास हो ही गया।

उस साल गर्मियों की छुट्टी में वह अपने घर आया। सेमिनरी जाने के बाद वह पहली बार घर आया था। सेमिनरी से वह कुछ सूरजमुखी के बीज लाया था। वह लिली और डेहलिया के बीज भी लाया था। उसने ये बीज अपनी बगिया में बो दिए और माँ की मदद से उनकी देखभाल करता रहा।

तीन-चार दिन तो वह घर से बाहर ही नहीं निकला। अब वह बालचन्द्रन नहीं "ब्रदर" यानी "छोटा पादरी" था। दोस्तों से मिलने में उसे शर्म आ रही थी। लेकिन दोस्तों से मिलते ही उसका सारा संकोच छूमन्तर हो गया।

छुट्टियाँ बीत गईं। स्कूल लौटने का समय हो गया। अपने नाम को लेकर जो उलझन उसके मन में थी, उसने माँ को बताई। माँ ने उसकी बात ध्यान से सुनी और फिर मुस्कराकर बोली – "तू जो बीज शहर से लाया है उनके पौधे निकलेंगे और फिर उन सब में फूल खिलेंगे – लिली, सूरजमुखी, चमेली – सबके अलग-अलग नाम होंगे। लेकिन फूल तो वही रहेंगे। है न? तो नाम से क्या फर्क पड़ता है?"
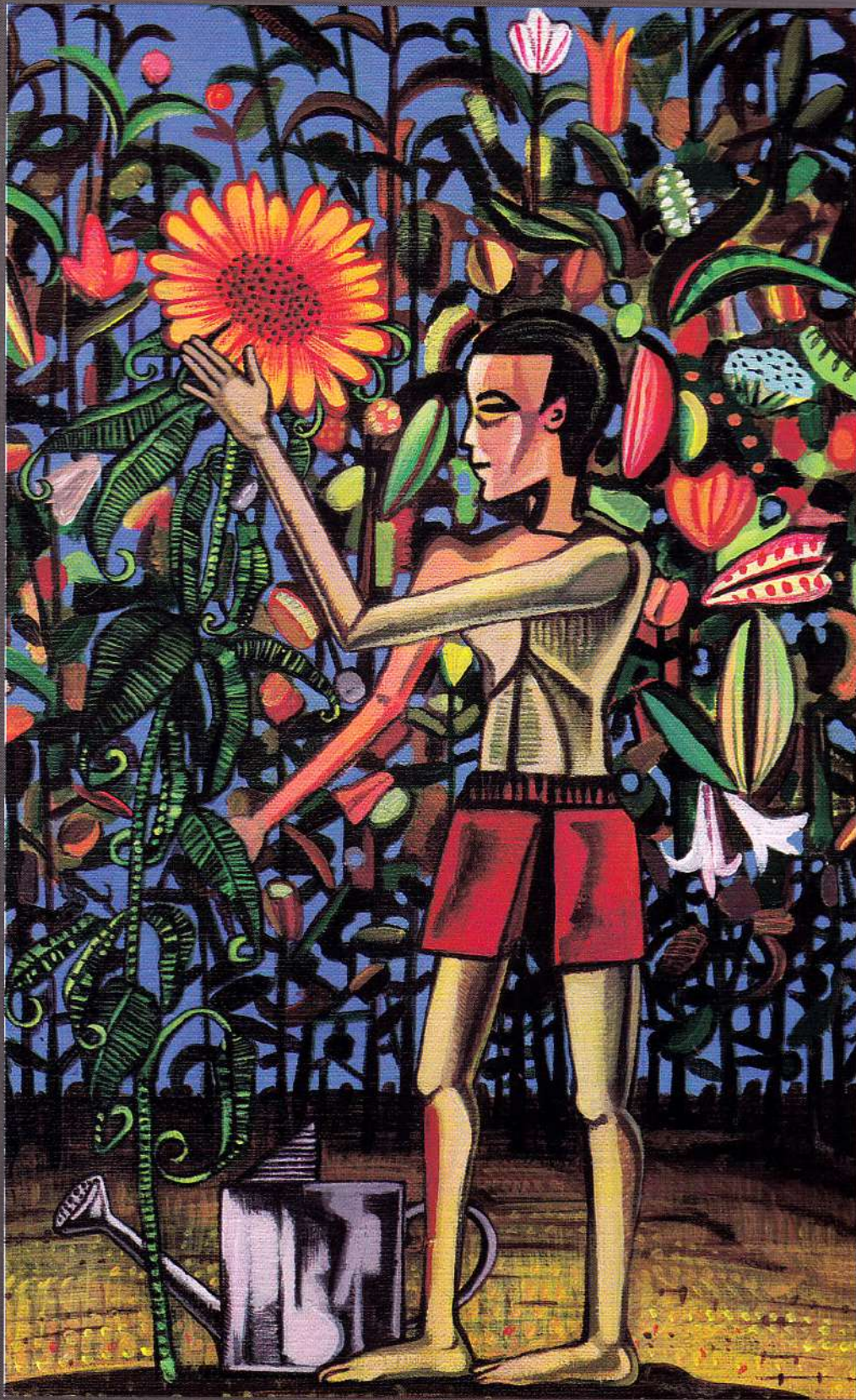
छुट्टियाँ बीत गईं। बालचन्द्रन के सेमिनरी लौटने का समय हो गया। जब वह रवाना हो रहा था, माँ बोली, देख! तेरा चन्द्रमुखी तुझे बुला रहा है।

"चन्द्रमुखी? या सूरजमुखी?" उसने अचरज से पूछा।

सब हँस पड़े। दो पल उसने सोचा और फिर खुद भी हँस पड़ा। सूरजमुखी ने इन्हें देखा और फिर वह भी हँस पड़ा।

खुशबू और बदबू

सारा जोसेफ

चित्रांकन
कुनाल दुग्गल

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

शृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य

"कोकनचिरा! कोकनचिरा!"

अन्नी के दिल में आग लग गई। कोकनचिरा! इसकी इतनी हिम्मत कैसे हुई? क्या वह किसी लाश की बेटी है? मैडम लोग ऐसे ही करती हैं। ज़िन्दा बच्चों को लाश कहना, इन्सानों को "कोकन" कहना और फिर उन्हें चपतियाना या छड़ी से पीटना!

"इन कमीनों को सज़ा देते-देते मैं तो तंग आ गई।" अन्नम्मा मैडम बड़बड़ाईं। फिर उन्होंने हुकुम झाड़ा – "चलो दूर हटो सबसे! और उधर जाकर खड़ी रहो।" अन्नी ने अपनी इमला वाली स्लेट मेज़ पर रखी और दूर जाकर खड़ी हो गई। अन्नम्मा सही-गलत जो भी देना हो, इस तरह देती है कि स्लेट उसकी उँगलियों को छू न जाए – मानो स्लेट बदबू मार रही हो। उनके चेहरे पर गुस्से और लानत के भाव रहते हैं। मुस्कराने में इनके पैसे लगते हैं क्या? अन्नी सोचती है।

"लो और भागो।" टीचर स्लेट की तरफ इशारा करके कहती हैं। अगर सही उत्तरों पर भी गलत का निशान लगा हो तब भी अन्नी शिकायत करने की हिम्मत नहीं करेगी। और अन्नी ही क्यों, कोई भी कोकनचिरा बच्चा ऐसा करने का साहस नहीं करेगा।

"कमीने! न कभी नहाते हैं न कभी दाँत माँजते हैं।" अम्मिनी टीचर कहती हैं।

"क्या पता हगने के बाद पिछवाड़ा भी साफ करते हैं या नहीं।" सरस्वती टीचर कहती हैं। इसे सुनकर अन्नी के तन-बदन में आग लग जाती है। क्या मैं पागल हूँ जो बगैर साफ-सफाई के स्कूल आ जाऊँगी?

अन्नी रोज़ अपना पिछवाड़ा साफ करती है, मंजन करती है और स्नान करती है। अगर वह पाखाने के बाद साबुन से हाथ नहीं धोए तो कुट्टीप्पन उसे डाँटता है।

जब भी अन्नी पाखाने के लिए जाए सारे घर को बताकर जाती है।

"जा जा!" अम्मा गुस्सा करती है।

"धोया कि नहीं?" लौटने पर कुट्टीप्पन पूछता है।

हाँ!

साबुन से हाथ धोए?

अन्नी हाथ दिखाती है।

किसी टीचर को हक नहीं है कि वह अन्नी की साफ-सफाई में कोई नुक्स निकाले। कुट्टीप्पन और वह दोनों मंजन करते हैं। पहले काले-पिसे उमिक्करी से और फिर आम की पत्ती से और उसके बाद – हालाँकि अन्नी को अच्छा नहीं लगता नीम की दातौन से। मुँह कड़वा हो जाता है और अन्त में कुट्टीप्पन नारियल को चीरता है और दो टुकड़े कर एक हिस्सा अन्नी को जीभ साफ करने के लिए देता है।

अन्नी की कक्षा के बहुत-से बच्चे अपने नाखून नहीं काटते। उनके नाखूनों में घुसी मैल की काली परत दिखाई देती है।

"शैतान!" नाखून न काटने वालों को अन्नम्मा टीचर शैतान कहती हैं। वैसे नाखून कटवाना अन्नी को भी पसन्द नहीं। कुट्टीप्पन ने नाखून काटते समय कई बार अन्नी को ज़ख्मी कर दिया है।

"हाथ पीछे मत खींच!" कुट्टीप्पन बोलेगा।

और अन्नी हाथ पीछे ज़रुर खींचेगी। इस चक्कर में उँगली की चमड़ी कट जाएगी। खून नहीं निकला तब तो ठीक वरना वह मचल जाएगी और कुट्टीप्पन के लाख मनाने पर भी नहीं मानेगी। और इसके बाद भी वह बीच-बीच में अपनी कटी उँगली को देखेगी और कुट्टीप्पन को देखते हुए शिकायती मुद्रा में सुबकेगी।

"तुझे हज़ार बार समझाया कि जब मैं तेरे नाखून काटूँ, ध्यान यहीं रखा कर और हाथ पीछे मत खींचा कर! समझाया था या नहीं? कुट्टी कहेगा।"

कुट्टीप्पन ने ही उसे बताया था कि नाखून नहीं काटने से क्या-क्या बीमारी हो सकती हैं। उसी की वजह से अन्नी के नाखून कटे रहते हैं। अन्नी यही बात अपनी सहेलियों को बताती है, लेकिन वे अन्नी की बात पर कोई ध्यान नहीं देतीं। कोई-कोई तो उसका मज़ाक उड़ाने लगती हैं।

एक दिन अन्नम्मा टीचर ने कहा कि जो नाखून काटकर नहीं आएगा उसे मैं धूप में खड़ा करके मुर्गा बनाऊँगी। लेकिन इसका भी कोई असर नहीं हुआ।

– "हाथ दिखाओ।" अन्नम्मा टीचर ने कहा।

वासू ने हाथ बढ़ाया।

– नाखून क्यों नहीं काटे?

– मुझे आता नहीं कैसे काटते हैं।

– तुम्हारी माँ भी नहीं जानती?

– वो काम पर जाती है।

– और बाप?

वासु चुपचाप टीचर को देखता रहा।

– घूर-घूरकर क्या देख रहा है? तुझ से डर जाऊँगी क्या? बाप नहीं काट सकता तेरे नाखून?

– बाप नहीं है।

– "कल नाखून काटकर नहीं आया तो धूप में तपाऊँगी।" टीचर ने कहा। अन्नी को वासु के लिए बहुत बुरा लगा। वासु का बापू नहीं है। अन्नी का है, लेकिन कहाँ है, उसे पता नहीं। माँ से पूछो तो गुस्सा करने लगती है। कहती है – बकबक बन्द कर! मुझे

पचास काम करने को पड़े हैं। जो बच्चे नाखून नहीं काटते उनकी उँगलियों में घाव हो जाते हैं। वासु के दोनों पैरों में घाव हो गए हैं। कभी-कभी वह उन्हें इतना खुजाता है मानो गुस्सा उतार रहा हो। खुजाते-खुजाते उसके खून निकलने लगता है। उसके घुटनों से खून बहता देख डर लगता है।

अम्मिनी टीचर की कक्षा में एक दिन वासु ऐसे ही ज़ोर-ज़ोर से खुजा रहा था। टीचर ने उसे डाँटा – "जा, धोकर आ! गन्दा कहीं का!" अम्मिनी टीचर गणित पढ़ाती हैं। जैसे ही वह बोर्ड पर कुछ लिखने के लिए चॉक उठाती हैं, वासु खुजाना शुरू कर देता है। आखिर जब मैडम उससे कहती हैं – जा, पैर धोकर आ, तो वह सरपट भागता है।

टीचर पास से निकलती हैं तो तरह-तरह की खुशबू आती है। कभी पाउडर की, कभी महँगे साबुन की, कभी इत्र की!

अन्नी के घर खुशबूदार साबुन नहीं खरीदा जाता। अन्नी कपड़े धोने वाले साबुन से ही नहाती है। अम्मा कपड़े धोने के सोडे से उसके बाल धो देती है। इस तरह धोने से बाल नारियल के छिलके जैसे कड़े हो जाते हैं। साबुन से नहाओ तो बालों में से अच्छी खुशबू आती है। अन्नी ने कभी पाउडर या इत्र नहीं लगाया। उसे अन्नम्मा टीचर की गन्ध सफेदा जैसी खुशबू अच्छी नहीं लगती। टीचर की रोज़ नाक बन्द रहती है। इसीलिए वह गन्ध सफेदा इस्तेमाल करती हैं। लेकिन इसकी गन्ध अन्नी को पसन्द नहीं। इस गन्ध से ऐसा लगता है जैसे घर में कोई मर गया हो। अम्मिनी टीचर में से चमेली की खुशबू आती है। दोस्त लोग कहते हैं ऐसा इसलिए है क्योंकि वह चमेली का इत्र लगाती हैं। वह पास से गुज़रती हैं तो कोकनचिरा के बच्चे ज़ोर से साँस खींचते हैं ताकि चमेली की खुशबू उनके नथुनों में भर जाए।
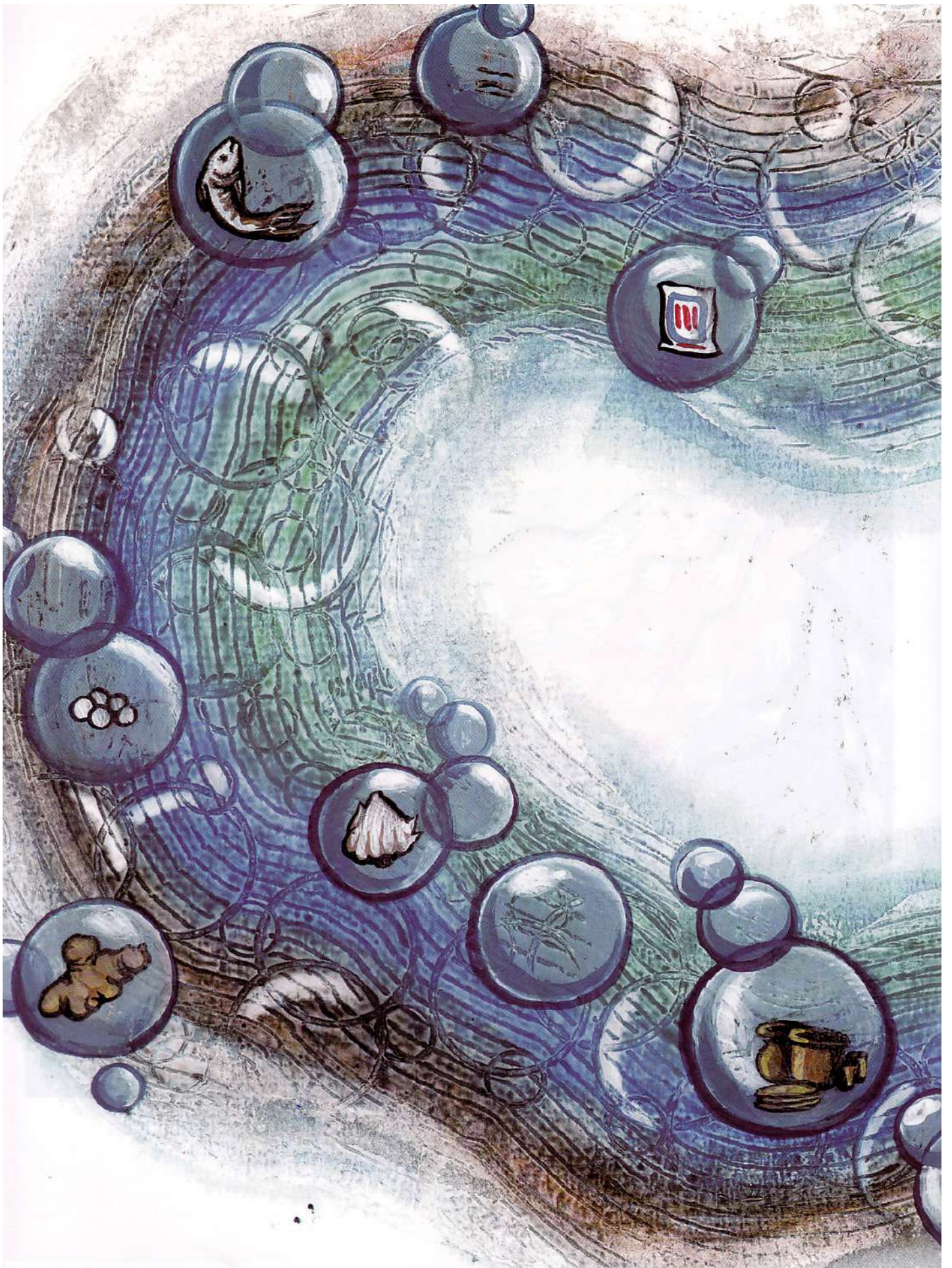
अन्नी की माँ से अलग-अलग समय अलग-अलग खुशबू आती है। कभी लहसुन की, कभी कपड़े धोने के सोडे की, तो कभी जंग खाई धातु की। और कभी नेफ्था की गोलियों की। किसी दिन उसने मछली पकाई तो मछली की। एक दिन डरते-डरते अन्नी ने माँ से कहा – माँ, तुम खुशबूदार साबुन से नहाया करो। माँ ने उसे झिड़कते हुए कहा – "यहाँ चावल खरीदने को पैसे नहीं है और इसे खुशबूदार साबुन की पड़ी है। वाह! क्या नखरे हैं।"

अन्नी नहीं समझ पाई कि मार्था मैडम ने उसे किस बात पर पीटा। उन्होंने अन्नी पर लंच के लिए लाइन में खड़े बच्चों को तितर-बितर करने का इल्ज़ाम लगाया। पर ऐसा तो कुछ नहीं हुआ था। उसे तो पता भी नहीं कि किसने धक्का दिया था। और वह मार्था मैडम के ऊपर जा गिरी थी। "मैडम से क्या महक आ रही है!" अन्नी तो ये तक न सोच पाई थी। इससे पहले ही मैडम का तमाचा उसके गाल पर पड़ चुका था। इसके बाद उन्होंने अन्नी की थाली छीनकर उसे दूर फेंक दिया। अन्नी को कहा कि वो लाइन में सबसे आखिर में जाकर खड़ी हो जाए। अन्नी को पिटने से ज़्यादा दुख अपनी बेइज़्ज़ती का हुआ था। वह चुपचाप जाकर लाइन में लग गई। धूप में पड़ी उसकी थाली दुत्कारे चाँद की तरह दिख रही थी। "मैं आज लंच नहीं करूँगी," अन्नी सोच चुकी थी।
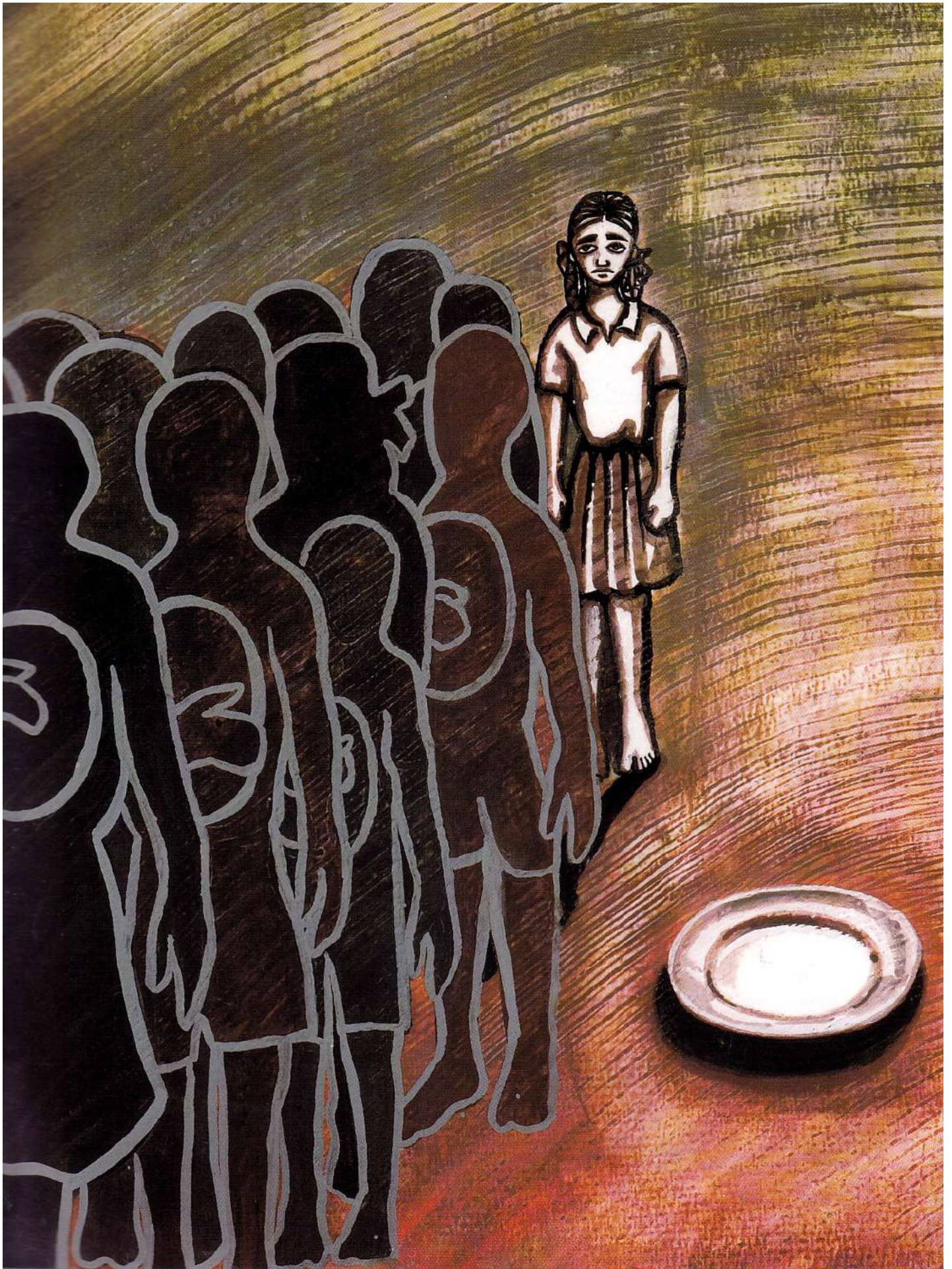
टीचर लोग कहते हैं कि कोकनचिरा बच्चे लालची होते हैं। जबकि कोकनचिरा के बच्चे सिर झुकाए, सारे अपमान सहते, राशन की दुकान से आए बदबूदार चावलों की खिचड़ी खाते रहते हैं। अन्नी अपनी तश्तरी को सीने से लगाए घर जा रही थी।
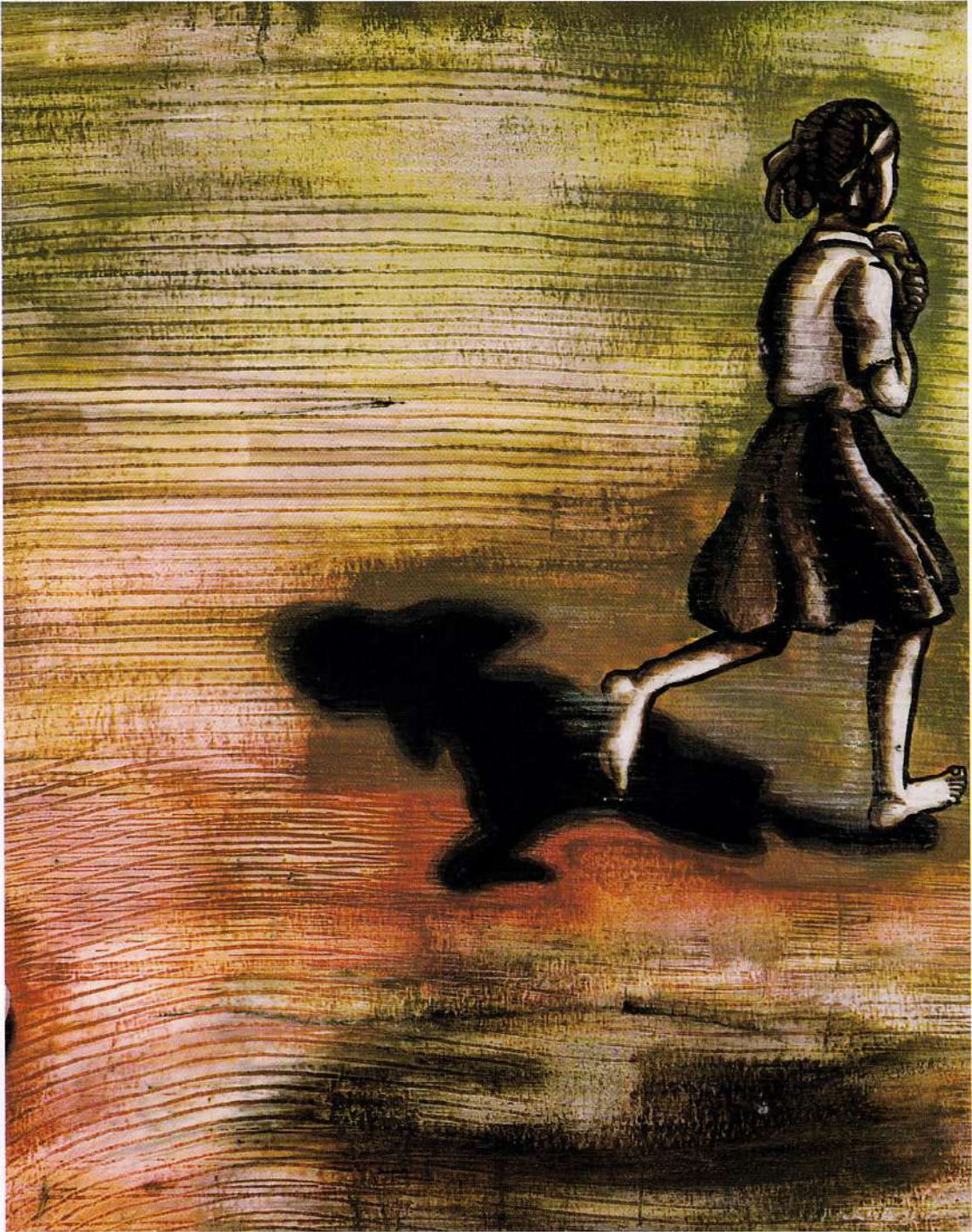
शायजा की जगह

एस संजीव

चित्रांकन
लावण्या मनी

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

श्रृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य
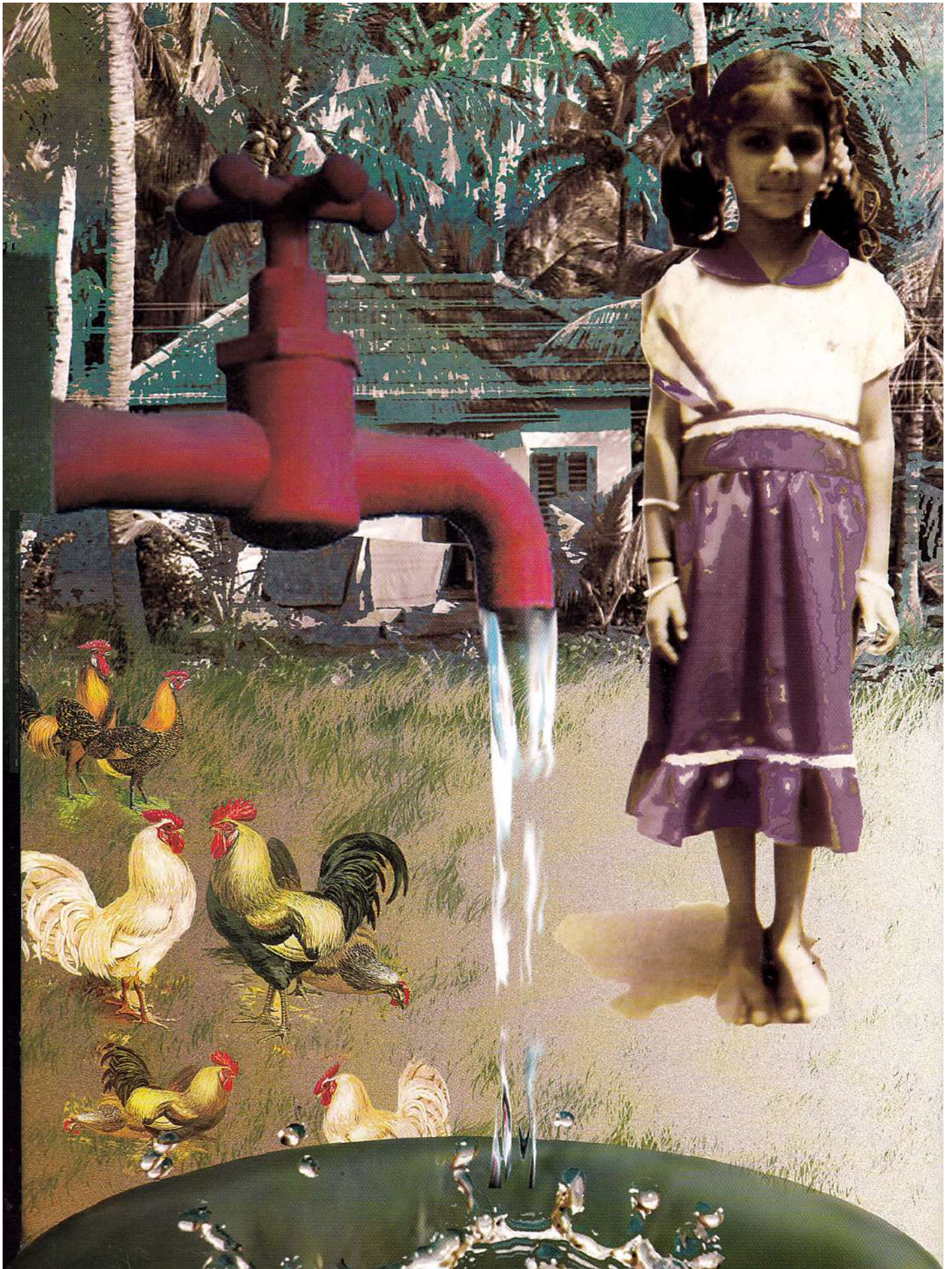
शायजा ने नल की तरफ देखा। चार बालटियाँ और एक बरतन भरना बाकी था। इसके बाद उसकी बारी आएगी। रोज़ स्कूल से लौटने के बाद वह पास-पड़ौस का एक चक्कर लगाती है, कुछ देर खेलती है और सूर्यास्त के समय बरतन-भाण्डों-बालटियों की इस लम्बी कतार में लग जाती है। शाम को नहा नहीं पाती – दिन भी कुछ खास अच्छा नहीं बीता होता – तो रसायनशास्त्र के सूत्र और कुमारन अशन की कविता किस्म की सारी चीज़ें दिमाग से हवा हो जाती हैं। यहाँ तक कि उसका पेट भी चावल-माछ झोल खाने से और आँखें नींद और सपनों में डूब जाने से इन्कार कर देती हैं।

पानी जया चेची की बालटी में भर रहा था। जब बालटी भर गई तो जया चेची ने बालटी हटाकर भगोना नल के नीचे लगा दिया। रामलथुम्मा और गिरिजा मामी हमेशा की तरह बातों में लगी थीं।

शायजा ने आसमान की तरफ देखा। एकाध को छोड़कर तारे दिखाई नहीं दे रहे थे और चन्द्रमा का भी कोई निशान नहीं था। उसे याद आया कि कैसे आज बीच की छुट्टी में हर कोई सिर्फ अन्तरिक्ष में रहने की बात कर रहा था।
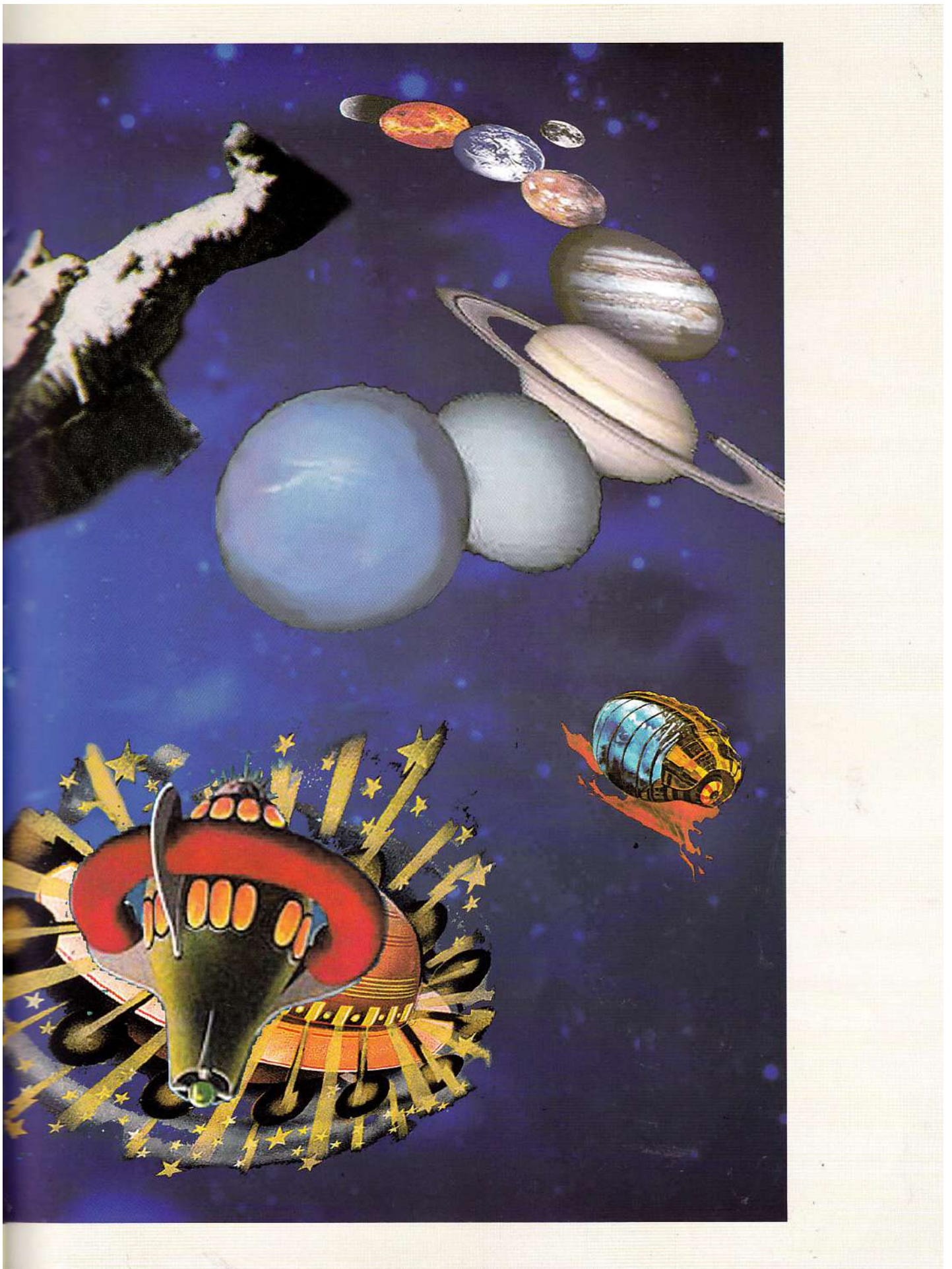
हाय! क्या मज़ा आता होगा!

उसने सोचा क्या इसके आगे और भी आसमान और चाँद-तारे हो सकते हैं? बड़ा मज़ा आया जब सुष्मिता ने पूछा कि क्या हमें अन्तरिक्ष से अपना घर दिखाई देगा? बुद्धू! सबने उसका मज़ाक उड़ाया। वे बोले – अरे बुद्धू! वहाँ से तो चीन की दीवार भी दिखाई नहीं देगी।

चलो सुष्मिता का घर तो बड़ा है। दुमंज़िला है और उसके ऊपर भी एक कमरा है। तो क्या पता! हो सकता है अन्तरिक्ष से भी दिखाई दे जाए! जब जनार्दन सर ने सुना कि हम लोग अन्तरिक्ष में जाने और रहने की सोच रहे हैं तो उन्हें हँसी आ गई। "बेहतर है कि तुम लोग मन लगाकर पढ़ाई करो और सातवीं कक्षा में पहुँचो पहले।" उन्होंने कहा। उनके लिए यह सब सिर्फ एक मज़ाक था। उनकी मूँछों तले हरदम मुस्कराहट मचलती रहती थी।

आसमान पर नारंगी, लाल, नीला और सफेद रंग फैले हुए थे। शायजा ने सोचा क्या कोई अन्तरिक्षयात्री उसे यहाँ नल के पास खड़ा देख पा रहा होगा? क्या वह ऊपर मुँह करके एक हवाई चुम्बन फेंके? उसने नल की तरफ देखा! तीन बालटियाँ अभी और भरनी थीं।

अम्मा अब तक बस में बैठ चुकी होगी। उसके घर आने से पहले शायजा झटपट नहा लेना और एक कप कड़क चाय पी लेना चाहती थी। अम्मा कस्बे के बाहर की तरफ बने पर्यटक ग्राम में काम करती है। वहाँ झील और समुद्र आपस में मिलते हैं। हरी झील और नीले समुद्र के बीच स्थित सुनहरे समुद्र तट को शायजा कभी जी भरकर नहीं देख पाई। जब भी मौका मिलता वह माँ के साथ वहाँ चली जाती। छुट्टियों के दिन पूरा समुद्र तट जगह-जगह से आए सैलानियों से भरा रहता। झील में नावें दिन भर इधर से उधर दौड़ती रहतीं – जैसे अम्मा और क्लारा चेची। वे दोनों बगीचे को और रास्तों को साफ रखने की कितनी ही कोशिश कर लें, उनके सफाई करने के फौरन बाद वहाँ केले के छिलके, सिगरेट के ठुड्डे और प्लास्टिक के कप नज़र आने लगते। उसका दिल बड़ा दुखता कि अम्मा को बगैर थोड़ा-सा भी आराम किए फिर से सफाई में जुट जाना पड़ता। लेकिन वह शायजा को कभी अपनी मदद नहीं करने देती। हमेशा यही कहती – "तू उधर छाया में जाकर बैठ।"

झील के किनारे पर बहुत सारे पेड़ थे। वह जब भी पर्यटक ग्राम जाती, तीनों साथ-साथ खाना खाते। कभी-कभी क्लारा चेची कोई खास चीज़ बनाकर लाती – जैसे अण्डा करी या मीट! लेकिन अम्मा को मछली ज़्यादा पसन्द थी। बस खाने के साथ एक टुकड़ा मछली मिल जाए – उसे और कुछ नहीं चाहिए। क्लारा चेची उसे छेड़ती थी कि री! तू पिछले जनम में ज़रूर बिल्ली ही रही होगी। यह सुनकर अम्मा झेंप जाती और छोटी-सी प्यारी-सी बिल्ली जैसी लगने लगती।

"मैं ठीक से पढ़ाई करुँगी और बड़ी हो जाऊँगी तो अम्मा को अपने साथ अन्तरिक्ष में ले जाऊँगी।" शायजा ने सोचा। "और मैं एक खूब बड़ा घर बनवाऊँगी जो अन्तरिक्ष से और उसके आगे से भी दिखाई देगा।" उसने सोचा – अच्छा! क्या वहाँ समुद्र और नदियाँ होंगी? अगर नहीं हुईं तो अम्मा को मछली कैसे खाने को मिलेगी? लेकिन ये भी तो हो सकता होगा कि हम हर सुबह धरती पर आ जाएँ और थैला भर मछली ले जाएँ। शायजा अपनी ही कल्पना पर मुस्करा उठी।

रामलथुम्मा उसे पुकार रही थी। "शायजा बेटी। तुम्हारी बारी आ गई।" शायजा ने मुस्कराते हुए अपनी बालटी नल के नीचे लगाई और आसमान की तरफ देखने लगी। टिमटिमाते हुए तारे दिखाई देने लगे थे। अम्मा बस से उतर रही होगी।

दो नाम वाला लड़का तथा अन्य कहानियाँ
DO NAAM WALA LADKA TATHA ANYA KAHANIYAN

मूल तेलुगू कहानीः

दो नाम वाला लड़का (पी वाय बालन)
चित्रांकन: सत्यानंद मोहन

खुशबू और बदबू (सारा जोसेफ)
चित्रांकन: कुनाल दुग्गल

शायजा की जगह (एस संजीव)
चित्रांकन: लावण्या मनी

डिज़ाइन: चिनन
अँग्रेज़ी से अनुवाद: स्वयं प्रकाश
शृंखला सम्पादक: सुशील शुक्ल

Anveshi

डिफरेंट टेल्स: स्टोरीज़ फ्रॉम मार्जिनल कल्चर्स एंड रीजनल लैंग्वेज, हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ की एक पहल।
अँग्रेज़ी तथा मलयालम में डी सी बुक्स, कोट्टायम, केरल द्वारा और तेलुगू में हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ द्वारा प्रकाशित।

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करण: जून 2019 / 2000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2021 / 2000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैट आर्ट और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-85236-39-6
मूल्य: ₹ 120.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउण्डेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल 462 026 (म प्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

किताबों की सूची

सिर का सालन

फिर जीत गई ताटकी और दिलेर बड़ेय्या

फटेहाल आदमी

स्कूल की अनकही कहानियाँ

दो नाम वाला लड़का तथा अन्य कहानियाँ

माँ

अगर आपके दो नाम हों तो क्या आप दो अलग-अलग व्यक्ति हो जाएँगे? एक लड़का इसी दुविधा में से गुज़र रहा है।

दो नाम वाला लड़का

अन्नी की माँ इस बात का हमेशा खयाल रखती है कि अन्नी स्कूल जाते समय एकदम साफ-सुथरी दिखे। फिर उसकी शिक्षिकाएँ ऐसा बर्ताव क्यों करती हैं जैसे कि उससे घिन आती हो?

खुशबू और बदबू

अपनी बालटी भरने के लिए लाइन में लगी शायजा अन्तरिक्ष यात्रा पर निकल पड़ी है।

शायजा की जगह
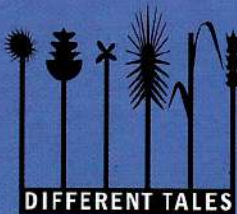
मूल्यः ₹ 120.00

डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ-ढूँढकर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं - ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है। कई सारी कहानियाँ लेखकों के अपने बचपन का बयान करते हुए बड़े होने के अलग-अलग ढंगों को प्रस्तुत करती हैं, प्रायः एक प्रतिकूल दुनिया में जहाँ वे हमजोलियों, पालकों और अन्य वयस्कों से नए सम्बन्ध बनाते हैं। ज़ायकेदार व्यंजनों, छोटे-छोटे जुगाड़ खेलों, स्कूल के अनापेक्षित सबकों और दिलदार दोस्तियों के माध्यम से ये कहानियाँ हमें एक दिलकश सफर पर ले जाती हैं।